प्रातः क्लास 17/11/68 ओमशांति पिताश्री शिवबाबा याद है?

ओमशांति। रूहानी बाप बैठ रूहानी बच्चों को समझाते हैं। रोज़-2 समझाते हैं; क्योंकि आधा कल्प के बेसमझ हैं ना। तो रोज़-2 समझाना पड़ता है। पहले-2 तो मनुष्य को शांति चाहिए। आत्माएँ असल में रहने वाली सभी शांतिधाम के ही हैं। बाप तो है ही सदैव शांति का सागर। अभी तुम शांति का वर्सा प्राप्त कर रहे हो। कहते हैं ना शांति देवा.... अभी शांति किसको कहा जाता है, यह भी कोई नहीं जानते। शांति को कहा जाता है मौत। कहते हैं शांति देवा.... अर्थात् हमको इस सृष्टि से अपने घर शांतिधाम ले चलो अथवा शांति का वर्सा दो। देवताओं के आगे वा शिवबाबा के आगे जाकर यह कहते हैं कि शांति दो; क्योंकि शिवबाबा है शांति का सागर। अभी तुम शिवबाबा से शांति का वर्सा ले रहे हो। बाप को याद करते-2 तुमको शांतिधाम में जाना है ज़रूर। न याद करेंगे तो भी जावेंगे ज़रूर। याद इसलिए करते हो कि पापों का बोझा जो सिर पर है वह खत्म हो जाये। शांति और सुख मिलता ही है एक बाप से; क्योंकि वह सुख का और शांति का सागर है। दो चीज़ ही मुख्य है। शांति को मुक्ति, सुख को जीवनमुक्ति कहा जाता है। फिर जीवनमुक्ति और जीवनबंध भी है। अभी तुम जीवन बंध से जीवनमुक्त हो रहे हो। सतयुग में कोई बंधन नहीं होता। गाया भी जाता है सहज मुक्ति-जीवनमुक्ति वा स(हज) गति-सद्गति। अभी दोनों का अर्थ तुम बच्चों ने समझा है। गति कहा जाता है शांतिधाम को। सद्गति कहा जाता है सुखधाम को। सुखधाम और शांतिधाम। यह है दुःखधाम। तुम यहाँ बैठे हो। बाप कहते हैं बच्चे शांतिधाम घर को याद करो। आत्माओं को अपना घर भूला हुआ है। बाप आकर याद दिलाते हैं। समझाते हैं–हे रूहानी बच्चो! तुम घर जा नहीं सकते हो, जब तक मुझे याद न करेंगे। मुझे याद करो तो तुम्हारे पाप भस्म हो जावेंगे। आत्मा पवित्र बन अपने घर जावेगी। तुम बच्चे जानते हो यह अपवित्र दुनिया है। एक भी पवित्र मनुष्य नहीं। पवित्र दुनिया को सतयुग, अपवित्र दुनिया को कलियुग कहा जाता है। सतयुग में एक भी अपवित्र हो न सके। नई दुनिया को पवित्र दुनिया, पुरानी दुनिया को अपवित्र दुनिया कहा जाता है। आधा कल्प है पवित्र दुनिया, आधा कल्प है अपवित्र दुनिया। रामराज्य और रावण राज्य। रावणराज्य से अपवित्र दुनिया शुरू होती है। यह भी ज़रूर होना ही है। यह बना बनाया खेल है ना। यह बेहद का बाप बैठ समझाते हैं। उनको ही सत्य कहा जाता है। सत्य बातें तुम संगमयुग पर ही सुनते हो। जो फिर तुम सतयुग में जाते हो। द्वापर से फिर रावण राज्य शुरू हो जाता है। रावण माना असुर ठहरा ना। असुर कब सत्य बोल न सके। इसलिए कहा जाता है झूठी माया झूठी काया..... आत्मा भी झूठी है तो शरीर भी झूठा है। आत्मा में ही संस्कार भरती है ना। सोना, चाँदी, ताँबा, लोहा। सोना तो है ही। फिर चाँदी पड़ती है, तो चन्द्रवंशी कहा जाता है। पहले है सूर्यवंशी। फिर दो कला कम होती है अर्थात् दो परसेंट खाद पड़ती है। चाँदी को तो चन्द्रवंशी कहा जाता है। फिर ताँबे की, लोहे की खाद पड़ती है द्वापर, कलियुग में। फिर चाँदी, ताँबा, लोहा आदि सभी निकल जाता है। बाकी सच्चा सोना रह जाता है। सच्चे सोने में कोई खाद नहीं होती है। ऐसे नहीं कहेंगे कि सोने की खाद पड़ती है। नहीं। सच्चा सोना तो तुम बनते हो इस योगबल से। तुम्हारे में जो चाँदी, ताँबा, लोहे की खाद पड़ी है वह निकल जाती है। पहले तो तुम सभी आत्माएँ शांतिधाम में हो। फिर पहले-2 आते हो सतयुग में, तो उसको कहा जाता है गोल्डन एज। तुम सच्चा सोना हो। योगबल से सारी खाद निकल कर बाकी सोना बचता है। शांतिधाम को कोई गोल्डन एज नहीं कहा जाता। गोल्डन एज्ड भारत को कहा जाता है, जब देवी-देवताएँ राज्य करते हैं। यहाँ ही गोल्डन एज, सिलवर एज, कॉपर एज कहा जाता है। शांतिधाम को कोई गोल्डन एज नहीं कहेंगे। वहाँ तो शांति ही शांति ही है। आत्मा जब शरीर लेती है तो गोल्डज एज कहा जाता है। फिर सृष्टि ही गोल्डन एज बन जाती है। सतोप्रधान 5 तत्व से शरीर बनता है। आत्मा सतोप्रधान है तो शरीर भी गोल्डन एज्ड(एज) सतोप्रधान मिलता है। फिर पिछाड़ी में आकर आयरन एज्ड(एज) शरीर मिलता है; क्योंकि आत्मा में खाद पड़ती है। तो गोल्डन एज, सिलवर एज..... इस सृष्टि को कहा जाता है। तो अभी

बच्चों को क्या करना है? पहले-2 शांतिधाम जाना है इसलिए बाप को याद करना है तब ही तमोप्रधान से सतोप्रधान बन जावेंगे। इसमें टाइम इतना ही लगता है जितना टाइम बाप यहाँ रहते हैं। ऐसे भी नहीं कहेंगे बाप शांतिधाम में गोल्डज एज में हैं। नहीं। वह तो गोल्डन एज में पार्ट लेते ही नहीं। तो आत्मा को गोल्डन एज्ड नहीं कहेंगे। आत्मा को जब शरीर मिलता है तब कहा जाता है यह गोल्डज एज्ड जीवात्मा है। ऐसे नहीं कहेंगे गोल्डज एज्ड आत्मा। नहीं। गोल्डज एज्ड जीवात्मा, फिर सिलवर एज्ड जीवात्मा होती है। तो यहाँ तुम बैठते हो, तुमको शांति भी सुख भी प्राप्त होती है। तो क्या करना चाहिए? दुःखधाम का सन्यास। इनको कहा जाता है बेहद का सन्यास। उन निवृत्ति मार्ग वाले सन्यासियों का है हद का सन्यास। घर-बार छोड़ जंगल जाते हैं। उनको यह पता नहीं है कि सारी सृष्टि ही जंगल है। यह है काँटों का जंगल। यह काँटों की दुनिया है। वह है फूलों की दुनिया। वह भल सन्यास करते हैं; परंतु फिर भी काँटे की दुनिया में, जंगल में ही, शहर से दूर-दूर जाकर रहते हैं। उनका है ही निवृत्ति मार्ग का धर्म। तुम्हारा है प्रवृत्ति मार्ग। तुम पवित्र जोड़ी थे। अभी अपवित्र बने हो। उनको गृहस्थ आश्रम भी कहते हैं। सन्यासी तो आते ही हैं बाद में। क्रिश्चियन कुछ पहले आते हैं। तो यह झाड़ भी याद करना है, चक्र भी याद करना है। बाप कल्प-2 आकर कल्पवृक्ष की नॉलेज देते हैं; क्योंकि खुद बीजरूप है। सत है, चैतन्य है। इसलिए कल्पवृक्ष का सारा राज़ समझाते हैं। तुम आत्मा तो हो; परंतु तुमको ज्ञान का सागर, सुख का सागर, शांति का सागर नहीं कहा जाता। यह महिमा एक बाप की ही है, जो तुमको ऐसा बनाते हैं। बाप की यही महिमा सदैव के लिए है। वह सदैव पवित्र है और सदैव निराकार ही है। सिर्फ थोड़े समय के लिए आते हैं पावन बनाने। सर्वव्यापी की बात तो है नहीं। तुम जानते हो बाप सदैव वहाँ रहते हैं। भक्ति मार्ग में सदैव उनको याद करते हैं। सतयुग में तो याद करने की दरकार नहीं रहती। रावण राज्य में तुम्हारा चिल्लाना शुरू होता है। वही बाप आकर सुख-शांति देते हैं। तो फिर ज़रूर अशांति में उनकी याद आती है। बाप समझाते हैं हर 5000वर्ष बाद मैं आता हूँ। आधा कल्प है सुख, आधा कल्प है दुख। आधा कल्प बाद ही रावण राज्य शुरू होता है। इसमें पहला नम्बर मूल है देह-अभिमान। इसके बाद ही फिर और विघ्न आते हैं। अभी बाप समझाते हैं अपन को आत्मा समझो। देही अभिमानी बनो। आत्मा की ही पहचान नहीं है। मनुष्य तो सिर्फ कहते हैं भृकुटी के बीच चमकता है। अभी तुम समझते हो वह है अकालमूर्त। इस अकालमूर्त आत्मा का तख्त यह शरीर है। आत्मा बैठती भी भृकुटी में है। अकालमूर्त का यह तख्त है। वह तख्त नहीं जो अमृतसर में लकड़ी का गाया जाता है। वह अकालतख्त तो झूठा है। बाप ने समझाया है जो भी मनुष्य मात्र हैं सभी अकाल तख्त हैं। अकालमूर्त का यह तख्त है। जो आत्मा आकर यहाँ विराजमान होती है। सतयुग है या कलियुग है, आत्मा का तख्त है ही यह मनुष्य शरीर। तो कितने अकाल तख्त हैं। जो भी मनुष्य मात्र हैं अकाल आत्माओं के तख्त हैं। आत्मा एक तख्त छोड़ झट दूसरा तख्त भरती है। पहले छोटा तख्त होता है फिर बड़ा होता है। यह शरीर रूपी तख्त बड़ा छोटा होता है। वह लकड़ी का तख्त जिसको सिक्ख लोग अकाल तख्त कहते वह तो छोटा बड़ा नहीं होता। यह किसको भी पता नहीं है कि सभी मनुष्य मात्र अकाल तख्त हैं, आत्मा अक.... है। कब विनाश नहीं होता। आत्मा को तख्त भिन्न-2 मिलती है। सतयुग में तुमको बड़ा फर्स्ट क्लास तख्त मिलता है। उनको कहेंगे गोल्डन एज्ड तख्त। तुम रहते ही हो गोल्डन एज में। फिर उस आत्मा को सिलवर एज्ड, कॉपर एज्ड, आयरन एज्ड तख्त मिलता है। फिर गोल्डन एज्ड तख्त चाहिए। सो तो पवित्र बनना पड़े। इसलिए बाप कहते हैं मामेकं याद करो तो तुम्हारे खाद निकल जावेगी। तुमको फिर ऐसा दैवर(दैवी) तख्त मिलेगा। अभी तुम ब्राह्... कुल के तख्त पर हो। पुरुषोत्तम संगमयुगी तख्त है फिर मुझ आत्मा को यह देवताई तख्त मिलेगी। यह बातें दुनिया के मनुष्य नहीं जानते। वह तो है ही जंगली जानवर। काँटों का जंगल है ना। देह-अभिमान में आने से एक/दो को दुख देते हैं। इसलिए इनको दुखधाम कहा जाता है। अभी बाप बच्चों को समझाते हैं शांतिधाम को याद करो, जो तुम्हारा असली निवास स्थान है। सुखधाम को याद करो। इनको भूलते जाओ। इनसे वैराग्य।

ऐसे भी नहीं सन्यासी मिसल घर-बार छोड़ना है। बाप समझाते हैं वह एक तरफ अच्छा है। दूसरे तरफ बुरा है। तुम्हारा तो अच्छा ही है। उनका हठयोग अच्छा भी है, बुरा भी है; क्योंकि देवताएँ जब वाममार्ग में जाते हैं तो भारत को थमाने लिए पवित्रता ज़रूर चाहिए। तो उसमें यह मदद करते हैं। भारत ही अविनाशी खंड है। बाप का भी यहाँ आना होता है तो यह जहाँ बेहद का बाप आते हैं, वह तो सबसे बड़ा तीर्थ हो गया ना। सर्व की सद्गति बाप कर देते हैं। इसलिए भारत ही ऊँच ते ऊँच देश है। उनको कहा जाता है सच खंड। फिर झूठ खंड बनता है। झूठ खंड को सच खंड सच्चा बाप ही बनाते हैं। यहाँ तो झूठ ही झूठ है। बड़े ते बड़ा झूठ है बाप को सर्वव्यापी कहना, कुत्ते-बिल्ले कण-कण में कहना। कितना छी-छी डिफेम करते हैं। कच्छ अवतार, मच्छ अवतार कहना यह ग्लानि करते हैं ना। शंकराचार्य जो सभी का गुरु है वही सबसे जास्ती ग्लानि करते हैं। इसलिए उनको हिरण्यकश्यप कहा जाता है। जो अपन को ईश्वर कहलाये, अपन को पूजा बैठ कराते हैं। है तो पुजारी ना। पूज्य कोई है नहीं। जब पूज्य देवी-देवताएँ होते हैं तो पुजारी होते ही नहीं। पुजारी है तो पूज्य नहीं। तो मूल बात बाप समझाते हैं याद की यात्रा। गीता में भी मनमनाभव अक्षर है। बाप कोई संस्कृत नहीं बतलाते हैं। बाप मन्मनाभव का अर्थ बैठ बताते हैं। देह के सभी धर्म छोड़ अपन को आत्मा निश्चय करो। आत्मा अविनाशी है। वह कब छोटी बड़ी नहीं होती। आत्मा में सारा पार्ट भरा हुआ है। यह अनादि अविनाशी ड्रामा बना हुआ है। पिछाड़ी में जो आत्माएँ आती हैं उनका बहुत थोड़ा पार्ट है। बाकी टाइम शांतिधाम में रहते हैं। स्वर्ग में तो आ न सके। पिछाड़ी को आने वाले वहाँ ही दुःख पाते हैं। जैसे दिवाली पर मच्छर कितने निकलते हैं, सुबह को उठकर देखो तो सभी मरे पड़े होंगे। तो मनुष्यों का भी ऐसे है। पिछाड़ी में आने वालों की क्या वैल्यु रहेगी। जैसे कि जानवर मिसल ठहरे। तो बाप बैठ समझाते हैं यह सृष्टि का चक्र कैसे फिरता है। मनुष्य सृष्टि रूपी झाड़ छोटे से बड़ा, बड़ा से छोटा कैसे होता है। सतयुग में कितने थोड़े मनुष्य, कलियुग में कितनी वृद्धि होते झाड़ बड़ा हो जाता है। मुख्य बात बाप ने इशारा दिया है गृहस्थ व्यवहार में रहते मामेकं याद करो। 8घंटा याद में रहने का अभ्यास करो। याद करते-2 आखरीन पवित्र बन बाप के पास चले जावेंगे तो स्कॉलरशिप मिलेगी। पाप अगर रह जावेंगे तो फिर जन्म लेना पड़े। सज़ाएँ खाते हैं, फिर पद भी कम हो पड़ता। हिसाब-किताब चुक्तू तो सभी को करना है। जो भी मनुष्य मात्र हैं। अभी तक भी जन्म लेते रहते हैं। इस समय देखेंगे भारतवासियों से क्रिश्चयन धर्म ऊँच है। वह फिर भी बहुत सेंसीबुल हैं। भारतवासी तो 100% सेंसीबुल थे सो अभी 100% नॉनसेंसीबुल बन गये हैं; क्योंकि यही 100% सुख पाते हैं फिर 100% दुख भी यह पाते हैं। वह तो आते ही पीछे हैं। तो वह इतने बेवकूफ नहीं बनते हैं। क्रिश्चयन से ही सभी कुछ सीखने जाते हैं। बाप ने समझाया है क्रिश्चयन डिनायस्टी का कृष्ण डिनायस्टी से कनेक्शन है। क्रिश्चयन डिनायस्टी ने राज्य छीना फिर क्रिश्चयन डिनायस्टी से ही राज्य मिलना है। इस समय क्रिश्चयन डिनायस्टी बड़ी जोर है। उनसे ही भारत को बहुत मदद मिली है। अभी भारत भूख मरता है तो रिटर्न सर्विस हो रही है। यहाँ से बहुत हीरे-जवाहर आदि वहाँ ले गये हैं। बहुत धनवान बने हैं तो अभी फिर धन पहुँचाते रहते हैं। उनको मिलने का तो है नहीं। तो अभी तुम बच्चों को कोई भी पहचानते नहीं हैं। अगर पहचानते तो आकर राय लें। तुम हो ईश्वरीय सम्प्रदाय। जो ईश्वर के राय पर चलते हैं वही फिर ईश्वरीय सम्प्रदाय से दैवी सम्प्रदाय बनेंगे। इस समय तुम सभी से ऊँच ईश्वरीय सम्प्रदाय हो। फिर दैवी सम्प्रदाय बनेंगे। फिर क्षत्रीय सम्प्रदाय, वैश्य सम्प्रदाय, शूद्र सम्प्रदाय बनेंगे। अभी हम सो ब्राह्मण हैं, फिर हम सो देवता क्षत्रिय.... हम सो का अर्थ देखो कितना अच्छा है। यह बाजोली का खेल का है जिसको समझना बहुत सहज है; परंतु माया भुलाये देती है। फिर दैवीगुणों से आसुरी गुणों में ले जाती है। अपवित्र बनना आसुरी गुण है ना। अच्छा, बच्चों को गुडमॉर्निंग और नमस्ते।

यह तो तुम बच्चे जानते हो कि यह नम्बरवार फूलों का बगीचा है; क्योंकि मुझे बागवान भी कहते हैं। इस बगीचे में किस्म2 के फूल हैं। कोई गुलाब मोतिया है तो कोई अक के फूल भी हैं। तो अपन को हरेक समझ सकते हैं हम कौन से फूल हैं। बाप तो गुलाब और मोतिया जैसे फूलों को देखेंगे उनकी खुशबू लेंगे। अक तरफ तो नज़र भी नहीं जावेगी।